17-4-67 ओम शान्ति प्रातः क्लास

दूसरा बार फिर बोलते है ओम शान्ति। क्योंकि दो है नां। एक प्रजापिता ब्रह्मा की आत्मा ने कहा ओम शान्ति, दूसरा शिव बाबा ने कहा ओम शान्ति। ओम अर्थात मै, कौन? आत्मा। मेरा यह शरीर है। पहले-2 यह अलफ सिखाया जाता है। ओम अथवा मै आत्मा। पीछे मेरा शरीर। तो मै आत्मा और शरीर दो चीजे हुई नां। नये कोई आते है तो पहले-2 सबक यही सिखाया जाता है नां। आत्मा अविनाशी है। और आत्मा रहती है परमधाम मे। मनुष्य यह बिलकुल नही जानते। वो तो बिलकुल ही जनावर है। शक्ल मनुष्य की है करतूतें जनावरो जैसी है। जैसे जनावर यह नही जानते कि मै आत्मा हूं मेरा यह शरीर है। वैसे ही मनुष्य भी नही जानते है। अभी तुम समझते हो मै आत्मा बिन्दी रूप हूं। यहां भृकुटी के बीच मे आत्मा निवास करती है। मेरा यह शरीर 5 तत्वों का बना हुआ है। इनमे जब तक मै प्रवेश नही करूं तब तक चुरपुर नही कर सकता है। मुझ आत्मा का बाप है परमपिता परमात्मा। वो निराकार है। मै आत्मा भी निराकार हूं। यह किसीकी बुद्धी मे यथार्थ रीती बैठना मुश्किल है। जो हमारे इस ब्राह्मण कुल के होंगे वो कुछ-2 समझेंगे। दूसरे किसीकी बुद्धी मे बैठेगा नही। यह कोई भक्तिमार्ग का सतसंग आद नही है। भक्ति मार्ग मे जिनकी पूजा करते है उनका आक्यूपेशन बिलकुल जानते नही है। कृष्ण की भल महिमा करते है परन्तु वो कब आया कहां गया वो कौन है यह कुछ भी जानते है नही। कृष्ण के लिये कब कह देते देवकी का बच्चा कब कह देते यशोदा का बच्चा। कब कह देते कुन्ती का बच्चा। एक मां भी नही दी है। बहुत माँ ए दिखलाते है। जो फिर शादी बाद नारायण बनते है। यह भी किसी मनुष्य मात्र को पता नही है। पूजा करते है परन्तु बिलकुल जानते नही है। यह दुनियां है ही कांटो का जंगल। एक दो को मारना काटना क्या-2 लगा हुआ है। भारत ही पहले गार्डन आफ फ्लावर्स था। दुःख की कोई बात नही थी। अभी भारत नर्क है। 84 जन्म तो लेने पड़ते है नां। इसको 84 का चक्र कहा जाता है। यह कौन बैठ समझाते है? भगवानोवाच्य। भगवान कोई मनुष्य को नही कहा जाता। अगर कोई मनुष्य अपने को भगवान कहलाते है तो वो है नम्बरवन शैतान। हरणाकश्यप। दैत्य आद। यह सब उनके नाम रखते है। अपने को शिवोअहम् कहना माना ही शैतान बनना। ऐसे सन्यासियों आद के फिर जाकर चेले बनते है। जैसे गुरू वैसे चेले। सब अन्धे है नां। गायन भी है गुरू जिसका अन्धला चेले सत्यानाश। मनुष्य यह कोई समझते नही है कि हम रावण सम्प्रदाय के है। अपने को पतित कहते है तो जरूर रावण ठहरे नां। कहते है भ्रष्टाचारी दुनियां है परन्तु अपने को भ्रष्टाचारी समझते नही है। मुख से कहते भी है पतित.... पूछो और तुम पतित हो? मानेंगे नही। साधु सन्त आद सब गाते है पतित पावन.... तो सब गुरू आद भी पतित वो ठहरे नां। सतयुग मे तो गुरू होता नही है। यह सब राज़ बाप ही आकर समझाते है। भगवानोवाच्य यह तो ब्रह्मा है। इनमे शिव बाबा प्रवेश करते है। कहते है कि मै शरीर कहां से लाऊं। तुम आत्मायें तो आकर गर्भ मे प्रवेश करती हो। फिर इस शरीर का नाम पड़ता है। आत्मा तो आत्मा है। फिर शरीर मे प्रवेश करते है तो मेल फीमेल बन जाते है। नही तो आत्मायें सब एक बाप की सन्तान है। हे परमपिता परमात्मा, ओ गाड फादर कहते है नां, कहते है आप जब आवेंगे तो मै वारी जाऊंगी। मेरा तो एक बाप दूसरा नां कोई। हम आप पर कुर्बान जावेंगे। आपकी ही बनूंगी। अब तुम बच्चे सब कहते हो शिव बाबा हमारा बाप है। वो है पारलौकिक बाप। उस बाप को दुःख मे सब याद करते है। बाप कितना अच्छी रीती समझाते है। नई-2 पुआइन्टस रोज-2 समझाते रहते है। सतयुग मे जब दैवी राज्य तो परमपिता परमात्मा को याद नही करते थे। क्योंकि सुख था। अब दुःख है तो सब पुकारते है। हे भगवान आकर दुःख से लिबरेट करो। दुःख हरो। सतयुग मे इस कहने की दरकार ही नही। सतयुग मे है सिर्फ पारलौकिक बाप। नां अलौकिक बाप है नां पारलौकिक बाप है। फिर द्वापुर मे जब पतित बनते है तब पतित पावन पावन बाप को याद करते है आकर हमको पावन बनाओ। रावण ने बहुत पतित

बनाया है। तुम सबको है इस समय तीन बाप। यह है अलौकिक बाप जिस द्वारा शिव बाबा पारलौकिक बाप आकर ज्ञान देते है। वो है पारलौकिक बाप, बेहद का बाप। कहते है मै आया हूं तुमको बेहद का सुख देने। यह पुरानी दुनियां है नां। मै आया हूं तुमको नई दुनियां मे ले जाने। तुम्हारा घर है निराकारी दुनियां वां निरवाणधाम। हम आत्मा निराकारी है यह शरीर साकारी है। निराकार बाप का निवास स्थान निराकारी दुनियां मे है। साकार तन तो बनता ही है 5 तत्वो का। आत्मा जिस मे प्रवेश करती है तो फिर जीवात्मा कहा जाता है। अभी तुम जो यहां बैठे हो तुम स्टुडन्ट हो। तुमको पढ़ाने वाला है गाड फादर। नालेजफुल। सारी सृष्टी की आद मध्य अन्त को जानते है। इस लिये उनको ही गाडफादर कहा जाता है। वो बेहद का बाप बैठ समझाते है। अभी तुम हे भगवान कह नही सक्ते हो। तुमको तो बाप मिला है। बाप से ही वर्सा मिलता है। भाई से नही मिल सक्ता। ब्र, वि, शं भी रचना है। इनसे वर्सा मिल नां सके। वर्सा मिलेगा ही शिव बाबा से। वो बेहद का रचता गाड फादर है। हद के बाप से हद का वर्सा। बेहद के बाप से बेहद का वर्सा मिलेगा। ~~अब~~ अभी तुम आये हो बेहद के बाप के पास। जानते हो यह बाप भी है टीचर भी है। सतगुरू भी है। सदगति दाता वो ही एक है। यह बाबा कोई-2 अच्छी रीती समझते होगे। स्कूल मे भी कोई अच्छी रीती समझते धारणा करते है कोई कम। नम्बरवार तो होते है नां। जो पूरी रीती नही पढ़ते है वो लस्ट मे बैठे रहते है। यह भी स्कूल है। तुम बच्चे जानते हो बाबा हमको इसमे आकर पढ़ाते है। बिगर शरीर के बाप पढ़ाये ही कैसे? इनमे शिव बाबा आकर पढ़ाते है। आत्मा दूसरे की भी आती है नां। कोई मरते है तो पित्र बुलाते है। फिर उनसे बैठ पूछते है। फलानी चीज कहां छोड़ गये हो....आगे बोलते थे। अब तो तमोप्रधान हो गये है। आगे खास तीर्थों पर जाते थे आत्मा बुलाने। अब आत्मा कैसे आती है? यह ड्रामा मे पार्ट है। ड्रामा को दूसरा कोई जानते नही है। समझने वाले भी नम्बरवार है। स्कूल तो वो ही है। स्कूल मे कोई फर्स्ट कोई सेकिंड कोई ~~थर्ड~~= थर्ड ग्रेड होते है नां। समझा जाता है इनकी तकदीर मे नही है ऊंच पद पाना। अभी तुम आत्मा सुन रही हो इन कानो से। बाप बोल रहे बाप बोल रहे है इस मुख से। इसलिये ही गऊ मुख भी कहा जाता है। गऊ मुख सो तो मनुष्य का मुख होगा नां। जानवर के मुख से कैसे ज्ञान अमृत निकलेगा। मनुष्य तो जैसे कि उल्लु पाजी है। एक पत्थर का गऊ का मुख बना कर फिर समझते है कि इसमे से गंगा निकलती है। यह गंगा जल से हम पावन बन जावेगे। बहुत लोग जाते है। है कुछ भी नही। पत्थर का मुख बना दिया है। मनुष्य तीर्थ समझ कर जाकर वहां पानी पीते है। समझते है यह गंगा जल है। अरे गंगा फिर यहां कहां से आई। कहते है अर्जुन ने जहां बाण मारा वहां से गंगा निकल आई। यह सब है भक्ति मार्ग की दंतकथाये। इनमे कुछ भी नही है। तो बाप आकर समझाते है कि तुम कितने तुच्छ बुधी बन गये हो। जिनकी पूजा करते हो उनको तुम जानते ही नही हो। और गाडफादर कहते हो परन्तु फादर को जानते नही हो। अभी तुम्हारी बुधी मे ऐम आब्जेक्ट है। बेहद का बाप हमको पढ़ाते है मनुष्य से देवता बनाने के लिये। दुनियां मे कोई यह थोड़ेई जानते है कि ल-न को यह बादशाही किसने दी। ल-न का मन्दिर बनाने वालो से पूछो इनको यह राजभाग किसने दिया कुछ भी बता नही सकेगे। तुम भी नही जानते थे अभी जानते हो वे ~~म~~ वाम मार्ग मे गये और हार गये। बाकी कोई लड़ाई आद नही की है। पतित बन कर राजाई हरा दी। अब तो पूरे पतित तमोप्रधान बन गये। ड्रामा अनुसार फिर इसी समय बाप को भी आना पड़ता है पतित भारत को हेवन बनाने। तुम आये हो ल-न बनने। अथवा इनकी राजाई मे पद पाने लिये इन देवताओं की ही माला बनी हुई है। तुम जानते हो हमको बाप पढ़ा रहे है। यह कोई साधु सन्यासी नही है। यहां शास्त्रों की बात ही नही। वो है भक्ति मार्ग की झूठी बाते। जो पढ़ कर कण्ठ कर लेते है और बैठ कर सुनाते है। यह बाप तो है ही ज्ञान का सागर। वो कब शास्त्र आदि पढ़ते है क्या?

कहते है मै सब कुछ जानता हूं। यह सब भक्ति मार्ग की सामीग्री है। जिससे मनुष्य नीचे उतरते-2 पतित बनते जाते है। भक्ति मार्ग माना ही है दुर्गति मार्ग। ज्ञान से है सदगति। यह वेद शास्त्र आद सब भक्ति मार्ग की कीय काण्ड है। मै ही आकर तुमको ज्ञान सुनाता हूं। कि यह रचना कैसे रची हुई है। तुम 84 जन्म कैसे लेते हो। भारतवासी ही 84 जन्म लेते है। बाकी क्रिश्चन का हिसाब करेंगे तो उनको 2000 का हुआ। तो बहुत करके 40 जन्म। बौधियों के 50 समझो। यह सब बाते कोई शास्त्रो आद मै थोड़ेई है। बाप कहते है मै तुमको सभी वेदो शास्त्रो का राज समझाता हूं। साधु सन्त आद सब भक्त है तब तो बाप ने कहा था नां कि मै इनका भी उदार करने आता हूं। तो वो भी दूसरे का उदार करेंगे कैसे? यह सब है भक्ति मार्ग के गुरू। इनसे तुम पतित ही बनते आये हो। पावन बनाने वाला एक ही मै हूं। मै जानता हूं जिन्होने कल्प पहले राजभाग्य लिया होगा वो ही आकर ब्राह्मण बनेंगे। ब्राह्मण बने तब तो देवता बने। यह चक्र है। ब्राह्मण बने तब देवता बने नां। अभी तुम ईश्वरिय कुल के हो। ईश्वर की गोद मै हो तो फिर देवता कुल मै हो गे। यह ज्ञान बाप ही बैठ सुनाते है। बाकी शास्त्र सब है भक्ति मार्ग के। इनमे कोई ज्ञान नहीं है। ज्ञान का सागर भगवान बाप है। वो ही ज्ञान सुनावेंगे नां। जो-2 ब्राह्मण बनते जावेंगे वो ही देवता बनेंगे। जितना पढ़ेंगे पढ़ावेंगे, दैवी गुण धारण करेंगे करावेंगे उतना ऊंच पद पावेंगे। इन जैसा (ल-न) यहां बनना है। यह है पुरूषोतम संगम युग। उत्तम ते उत्तम बनने का युग। बनाने वाला है भगवान बाप। इसलिये तुम ब्राह्मण सर्वोतम हो। फिर सतयुग मै पुरूषोतम बनेंगे। पुरूषो मै उत्तम। तुम देवताओ का धर्म बहुत सुख का देने वाला है। वहां तो हीरो जवाहरो के महल होते है। बाबा को बहुत बच्चे कहते है बाबा आप मकान बना रहे हो हम दो रूप्ये भेज देते है उससे एक ईट लगा देना। बाबा लिख देते है बेटी तुम्हारे यह दो रूपये नहीं पदम है पदम। क्यो कि वहां तुमको 21 जन्म लिये महल मिलेंगे। कितनी बड़ी कमाई है। बाप बेहद का वर्सा देते है। यहां है इनडायरैक्ट। मनुष्य दान आद करते है इनडायरैक्ट। धर्मशाला हास्पिटल आद बनाते है। समझते है इसका ऊजूरा हमको दूसरे जन्म मे मिलेगा। दूसरे जन्म मै शाहुकार के घर मै जन्म लेंगे। बस एक जन्म लिये फल मिला। ऐसे नहीं कि दूसरे जन्म मे भी वो दान पुण्य करते है। नहीं। कोई पापात्मा बन जाते है कोई शैतान कोई कुत्ते बन जाते है। अभी तो इस पढ़ाई से पवित्र बन कर गाड गाडेज बनते है। फिर पतित बनने से कुत्ता और बिल्ली बन जाते हो। तमोप्रधान दुनियां को बाप आकर फिर सतोप्रधान बनाते है। यह नालेज गाड फादर ही पढ़ाते है। तुम भगवान के स्टुडन्टस हो। इन ल-न का राज्य था नां। यह भगवान भगवतीहै नां। परन्तु कहा जाता है दैवी देवताये। यह समझने की बाते है। तुम अभी सतयुग का मालिक बन रहे हो। साधु सन्त आद सब इस समय नर्क के मालिक है। जो भी मनुष्य मात्र है सब नर्क मै है। सन्यासी माताओं को नागिन कह उनसे भागते है। समझते है यह नर्क का दवार है। अब बाप कहते है, इन्ही माताओं दवारा हम स्वर्ग का दवार खोलते है। परन्तु इनको जब कोई पहचाने। यह कहते है पवित्र बनना पड़ेगा। तो कहते है पवित्र कैसे बनेंगे। फिर दुनियां कैसे चलेगी। देवताओं को भी बच्चे थे नां। फिर वो तो सम्पूर्ण निरवकारी गाये जाते है नां। एकदम कह देते मूत बिना हम रह नहीं सकते। अबला मूत नां देवे तो उनको लात मार कर निकाल देते है। बाप तो कहते है विष छोड़ो। अमृत लो। और विश्व के मालिक बनो। जो कल्प पहले पवित्र बने है। वे ही अब भी बनते है। जिनको पूरा निश्चय है वो तो कहते है हम विष कब नहीं पिऊंगी। तुम्हारे कारण हम अपना वर्सा नहीं गवाऊंगी। पक्के निश्चय वुधी हो जाते है। पतित को पावन बनाने कितनी मेहनत करनी पड़ती है पवित्र बनते ही नहीं है। बाप का कहना मानते नहीं है क्यो कि पहचान नहीं है। भगवान की भी नहीं मानते है। जो फिर बाप की याद मै रहेंगे वो ही ऊंच पद पावेंगे। गुड मार्निंग